श्रीभगवानुवाच ।
सुदुर्दर्शमिदं रूपं दृष्टवानसि यन्मम ।
देवा अप्यस्य रूपस्य नित्यं दर्शनकांक्षिणः ।।५२।।

श्रीभगवान् उवाच=श्रीभगवान् ने कहा; **सुदुर्दर्शम्**=देखने को अति दुर्लभ है; **इदम्**=यह; **रूपम्**=रूप; **दृष्टवान् असि**=देखा है; **यत्**=जिस रूप की; **मम**=मेरे; **देवाः**=देवता; **अपि**=भी; **अस्य**=इस; **रूपस्य**=रूप के; **नित्यम्**=सदा; **दर्शनकांक्षिणः**= दर्शन. करने की इच्छा रखते हैं।

अनुवाद

श्रीभगवान् ने कहा, हे अर्जुन! मेरे जिस रूप का तू अब दर्शन कर रहा है, वह देखने को अति दुर्लभ है। देवता भी इस मधुर रूप को देखने के लिये नित्य उत्कण्ठित रहते हैं।।५२।।

तात्पर्य

इस अध्याय के अड़तालिसवें श्लोक में विश्वरूप का संवरण करते हुए भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कहा है कि विविध पुण्यकर्मों, यज्ञादि साधनों से भी इस रूप को देखा नहीं जा सकता। यहाँ **सुदुर्दर्शनम्** शब्द आया है, जिसका अर्थ है कि श्रीकृष्ण के द्विभुज रूप का दर्शन तो उस विश्वरूप से भी कहीं अधिक दुर्लभ है। तपश्चर्या, वेदाध्ययन, दार्शनिक मनोधर्म आदि विभिन्न क्रियाओं में भक्ति का कुछ पुट हो, तभी विश्वरूप का दर्शन हो सकता है। भक्ति के बिना विश्वरूप का दर्शन कभी नहीं हो सकता, यह विवेचन किया जा चुका है। इस विश्वरूप से अतीत होने के कारण श्रीकृष्ण के द्विभुज नराकार रूप का दर्शन तो और भी अधिक दुर्लभ है। ब्रह्मा, शिव आदि देववृंन्द तक श्रीकृष्ण के दर्शनार्थ नित्य लालायित रहते हैं। श्रीमद्भागवत में प्रमाण है कि जब वे माता देवकी के गर्भ में थे, तब स्वर्ग के सभी देवता उनके माधुर्य का दर्शन-आस्वादन करने वहाँ आये। उन्होंने प्रभु के प्रकट होने की आतुर-भाव से प्रतीक्षा भी की। मूर्ख मनुष्य उनका उपहास कर सकता है, परन्तु ऐसे साधारण मनुष्य का मूल्य ही क्या है। श्रीकृष्ण के द्विभुज रूप को देखने की स्पृहा तो वस्तुतः ब्रह्मा, शिव, आदि देवताओं तक को रहती है।

भगवद्गीता में यह भी प्रमाणित किया है कि श्रीकृष्ण उन मूर्खों के दृष्टिगोचर नहीं होते, जो उनका उपहास करते हैं। जैसा 'ब्रह्मसंहिता' तथा भगवद्गीता में स्वयं श्रीभगवान् के वचन से सिद्ध है, श्रीकृष्ण का विग्रह पूर्ण रूप से अप्राकृत और सच्चिदानन्दमय है, अर्थात् प्राकृत देह से बिलकुल भिन्न है। परन्तु कुछ लोग भगवद्गीता आदि वैदिक शास्त्रों का अध्ययन करने पर भी श्रीकृष्ण के तत्त्व को जानने में सफल नहीं हो पाते। प्राकृत दृष्टिकोण वाले उन्हें केवल एक महान् ऐतिहासिक पुरुष या विद्वद्वरेण्य परम दार्शनिक मानते हैं। किंतु वास्तव में वे सामान्य मनुष्य नहीं हैं। कुछ का विचार है कि यद्यपि वे अतीव शक्तिशाली थे, फिर भी उन्हें प्राकृत शरीर